श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

सा विद्या या विमुक्तये

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड़, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान परिचय फेब्रुवारी - 2024

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर 9 शहर ____________

विद्यार्थी का नाम ____________

प्रश्न-१ रिक्त स्थान		प्रश्न-२ एक ही शब्द में	
(१)	देसावगासिक	(१)	अवंति सुकुमाल को
(२)	दौर्भाग्य नामकर्म	(२)	उच्चगोत्र का
(३)	आयुध	(३)	उत्तर कुरुक्षेत्र
(४)	पद्मद्रहो	(४)	मन से कुव्यापार
(५)	सामायिक	(५)	परलोक
(६)	~~उच्चगोत्र~~ स्वाध्याय	(६)	उत्कृष्ट मोक्ष
(७)	~~धर्मकथा~~ उच्चगोत्र	(७)	शिक्षाव्रतो मे
(८)	धर्मकथा	(८)	महाविदेह क्षेत्र
(९)	रक्ता और रक्तवती	(९)	अस्थिर नामकर्म
(१०)		(१०)	मन का
(११)	वीर्यातिशय	(११)	आवश्यक क्रिया
(१२)	सरल एवं नम्र	(१२)	पारणे की
(१३)	वचन दुःप्रणिधान	(१३)	तुंगीय सन्निवेश
(१४)	चौथा पुत्र	(१४)	अनुग्रह मे
(१५)	तप के बल	(१५)	मकार सपेरा
(१६)	सीतोदा		
(१७)	उपघात		
(१८)	कर्म निर्जरा		
(१९)	शब्दानुपात		
(२०)	सिव सुहाण		

(५)	जाता है
(६)	महान
(७)	प्रत्येक
(८)	साधु
(९)	दुःखी होते है
(१०)	उत्कृष्ट
(११)	नदीयो
(१२)	नीच
(१३)	अस्थि
(१४)	स्वस्तिक
(१५)	विशाल
(१६)	गुणित
(१७)	त्रस
(१८)	पडजीभ
(१९)	ध्वनि
(२०)	सुशोभित

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	प्रेषण
(२)	अविधि से
(३)	अग्निकाय
(४)	हर्ष प्रदान करो

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	4	(६)	1
(२)	8	(७)	5
(३)	9	(८)	2
(४)	7	(९)	3
(५)	10	(१०)	6

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	6
(२)	51
(३)	14,000
(४)	26 वर्ष
(५)	10
(६)	12 योजन
(७)	8
(८)	10,64000
(९)	8
(१०)	32

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	✓	(१)	24
(२)	×	(२)	18
(३)	×	(३)	4
(४)	✓	(४)	17
(५)	✓	(५)	22
(६)	×	(६)	8
(७)	✓	(७)	5
(८)	✓	(८)	21
(९)	×	(९)	15
(१०)	×	(१०)	3

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-८ मिले हुए गुण	= कुल गुण

रीमार्क ____________ जांचनेवाले की सही ____________

प्रश्न - ८

१. सामायिक व्रत -> शिक्षाव्रतोंमें प्रवेश सामायिक व्रत द्वारा होता है। जिसमें समता की आय होती है, उसे सामायिक कहने में आता है। समता आये तोही सामायिक की सच्ची सफलता है, एक भी शुद्ध सामायिक आत्मा को नरक आदि दुर्गतिमें से बचाता है। नये आते कर्मों को अटकाने - पूर्व के कर्मों को खपाने ऐसे इस सामायिक व्रत को समझकर जीवनमें स्वीकारने तत्पर बनना चाहिए। जो रागद्वेष रहित यानि समता भाव का लाभ जिससे मिले, वही सामायिक है। उत्कृष्ट कोटी की साधना यानी सामायिक। ऐसे सामायिक को शुद्ध करने सामायिक के अतिचार एवं दोषों को भी जानना जरूरी है। शुद्ध सामायिक में रहा श्रावक साधु जैसा कहलाता है।

२. गोत्र कर्म -> गोत्र कर्म के दो प्रकार है - 1) उच्च गोत्र कर्म, २) नीच गोत्रकर्म। जिस प्रकार कुंभार दूध वगैरह के लिए सुघट - अच्छे, सुंदर घडे बनाता है, और मदिरा वगैरह के लिए कुघट - मुंभल भी बनाता है, उसी तरह कर्म सत्ता भी जीव को उसके कर्म के हिसाबसे उसे उच्च या नीच गोत्र दिलाती है। उच्च-निम्न नीच की प्राप्ति होती है। जिस कर्म के उदय से उच्चगोत्रमें जन्म मिले वह उच्च गोत्र कर्म, जिस कर्म के उदयसे नीच गोत्र में जन्म मिले वह नीचगोत्रकर्म। उच्च गोत्र के 8 भेद है। 1) जाति विशिष्टता, २) कुल विशिष्टता, ३) बल विशिष्टता ४) रूप विशिष्टता, ५) तप विशिष्टता, ६) श्रुत विशिष्टता, ७) लाभ विशिष्टता, ८) ऐश्वर्य विशिष्टता। इसी प्रकार नीच गोत्र इससे विपरीत समझना, जानना।

३. पौषध धर्म की आराधना -> पौषध साधुता की प्राप्ति हेतु की सीडी है। शुद्ध पौषध धर्म की आराधना आत्मा के हित के लिए साधक को करने की है। सर्व चार प्रकार के आहार का परिहार कर आहार पौषध करना चाहिए, सर्वथा प्रकार से स्नान आदि के द्वारा शरीर की शुश्रुषा यानि शोभा करने का परिहार करना तो शरीर सत्कार पौषध करना, सर्व प्रकार से औदारिक वैक्रिय मैथुन का परिहार करना वो ब्रम्हचर्य पौषध जानकर करना, पाप व्यापार का परिहार कर अव्यापार पौषध करना। कोई भी अतिचार न लगे ऐसा शुद्ध पौषध करना चाहिए, इससे कर्म निर्जरा होती है, आत्मा की निर्मलता प्राप्त होती है। जीव धर्म की पुष्टि को धारण करता है। पर्व के दिन अवश्य पौषध करना चाहिए।

४. सीता और सीतोदा नदीयों का वर्णन -> महाविदेह क्षेत्रमें सीता और सितोदा नदियाँ मुख्य है। सीता पूर्व तरफ लवण समुद्र को मिलती है, और सीतोदा पश्चिम महाविदेह में होकर पश्चिम की ओर लवणसमुद्र को मिलती है। महाविदेह के पूर्व विभाग के विजय की ३२ नदियाँ, ये सब नदियाँ पूर्व की सीता नदी को मिलती है। इसी तरह महाविदेह के पश्चिम विभाग की नदियाँ सिर्सीतोदा नदी को मिलती है। सीता नदी नीलवंत पर्वतपर रहे हुए केसरी द्रहमेसे निकलकर सीता प्रपात में पडकर उत्तर कुरुमे बहते हुए मेरुपर्वत को मोड देकर 5,32,000 नदियों के परिवार के साथ पश्चिममें लवणसमुद्र को मिलती है। 8 गंगा, 8 सिंधु, 8 रक्ता, 8 रक्तावती ये ३२ नदियाँ पूर्व में सीता नदी को और 8 गंगा, 8 सिंधु, 8 रक्ता, 8 रक्तावती ये ३२ नदियाँ पश्चिममें सीतोदा नदीमें अपने-अपने परिवार के साथ मिलती है।

५. मेतार्य गणधर की शंका और प्रभु का समाधान -> मेतार्य गणधर को परलोक के विषय में शंका थी। प्रभुने मेतार्य गणधर को कहाँ "नारको वै एष जायते यः शुद्रान्नमश्नाति" तथा "सएषयज्ञायुधी यजमानोऽञ्जसा स्वर्गलोकं गच्छति" ये वेदपद ही परलोक की सिद्धि करके बताते है, इन वेद पदोमें ऐसा कहा है कि जो ब्राम्हण शुद्र के अन्न को खाता है वो नारकी होता है, तथा वो इस यज्ञरूपी आयुधवाला यजमान शीघ्रता से स्वर्गलोकमें जाता है, इन वेदपदो का विचार करके परलोक के अस्तित्व को स्वीकार कर। प्रभु के मीठे वचनसे संशय दूर होनेसे प्रतिबोध पाकर ३०० शिष्यो सहित नम्रभावसे प्रभु के चरणोंमे झुक पडे, दिक्षा ग्रहण कर प्रभु के शिष्य हुए।

जिनाज्ञा विरुद्ध कुछ लिखा गया हो तो मिच्छामि दुक्कडम्